तृतीय माला, खंड 50, अंक 1 — सोमवार, 14 फरवरी, 1966/25 माघ, 1887 (शक)

Third Series, Vol. L, No. 1 — Monday, Feb. 14, 1966/25 Magha, 1887 (Saka)

लोक-सभा वाद-विवाद
का
संक्षिप्त अनूदित संस्करण

SUMMARISED TRANSLATED VERSION
OF
3rd
LOK SABHA DEBATES

[चौदहवां सत्र
Fourteenth Session]

18-6-92
4.1.84

सत्यमेव जयते

[खंड 50 में अंक 1 से 10 तक हैं
Vol. L contains Nos. 1—10]

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली

LOK SABHA SECRETARIAT
NEW DELHI

मूल्य : एक रुपया

Price : One Rupee

[यह लोक-सभा वाद-विवाद का संक्षिप्त अनुदित संस्करण है और इसमें अंग्रेजी/हिन्दी में दिये गये भाषणों आदि का हिन्दी/अंग्रेजी में अनुवाद है ।

This is translated version in a summary form of Lok Sabha Debates and contains Hindi/English translation of speeches etc. in English/Hindi.]

विषय-सूची

(तृतीय माला, खण्ड 50—चौदहवां सत्र, 1966)

अंक 1—सोमवार, 14 फरवरी, 1966/25 माघ, 1887 (शक)

राष्ट्रपति का अभिभाषण—सभा पटल पर
रखा गया . . . .

प्रधान मंत्री, सभा-नेता तथा अन्य मंत्रियों का
परिचय १

निधन सम्बन्धी उल्लेख .

विषय सूची/CONTENTS

अंक 2—मंगलवार, 15 फरवरी, 1966/26 माघ, 1887 (शक)

No. 2—Tuesday, February 15, 1966/Magha 26, 1887 (Saka)

प्रश्नों के मौखिक उत्तर/ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

*ता० प्र० संख्या 'S. Q. Nos.	विषय	Subject	पृष्ठ Pages
1	इण्डियन एयरलाइन्स कारपोरेशन की सेवायें	I. A. C. Services . . .	2629–31
2	देश में सूखा और अनावृष्टि	Drought and Failure of Rains .	2631–35
3	खाद्यान्नों की आवश्यकता	Foodgrains Requirements	2635–40
4	राज्यों में अकाल की स्थिति	Famine Conditions in States .	2640–44

प्रश्नों के लिखित उत्तर/WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

*ता० प्र० संख्या *S. Q. Nos.			
5	दिल्ली में अत्यावश्यक वस्तुओं के मूल्य	Prices of Essential Commodities in Delhi	2644
6	पश्चिमी घाट पर साइक्लोन (तूफान) के कारण लापता जहाज तथा माल	Vessels and Cargo lost in Cyclone in West Coast . . .	2645
7	फालतू अनाज वाले राज्यों से चावल की वसूली	Procurement of Rice from Surplus States	2645–46
8	सघन कृषि कार्यक्रम	Intensive Agricultural Programmes	2646
9	खण्ड विकास पदाधिकारी	Block Development Officers .	2646–47
10	हल्दिया पत्तन	Haldia Port	2647–49
11	केन्द्रीय मत्स्य पालन निगम लिमिटेड	Central Fisheries Corporation Ltd.	2649
12	केन्द्रीय सहकारी भण्डार, दिल्ली	Central Co-operative Stores, Delhi	2649–50
13	खंड विकास अधिकारी के पद का समाप्त किया जाना	Abolition of Post of Block Development Officers . . .	2650–51
14	चुनाव के खर्चे	Election Expenses . . .	2651–52
15	आपातिक खाद्य कार्यक्रम	Emergency Food Programme .	2652
16	कृषि के लिए आवश्यक सामग्री देने की योजना	Scheme to Issue Agricultural Inputs	2653

*किसी नाम पर अंकित यह + चिन्ह इस बात का द्योतक है कि प्रश्न को सभा में उस सदस्य ने वास्तव में पूछा था ।

*The Sign + marked above the name of a Member indicates that the question was actually asked on the floor of the House by that Member.

लोक-सभा

LOK SABHA

सोमवार, 14 **फरवरी** 1966/25 **माघ** 1887 (**शक**)

Monday, February 14, 1966/*Magha* 25, 1887 (*Saka*)

लोक सभा ~~ग्यारह बजे~~ समवेत हुई

The Lok Sabha met at ~~Eleven~~ of the Clock.

{ **अध्यक्ष महोदय** पीठासीन हुए
MR. SPEAKER *in the Chair* }

श्रीमती रेणु चक्रवर्ती (बैरकपुर) : इस से पहले कि आप सचिव से राष्ट्रपति के अभिभाषण को सभापटल पर रखने के लिये कहें, मैं आपसे अनुरोध करूंगी कि आप देश की खाद्य स्थिति सम्बन्धी स्थगन प्रस्ताव की अनुमति दें। मैं इस परम्परा को जानती हूं कि हमें पहले दिन ऐसे मामले नहीं उठाने चाहिये, परन्तु इस समय चूंकि हमारा देश खाद्य के मामले में एक ऐसे संकट से गुज़र रहा है जो हमने पिछले 17 वर्षों में कभी नहीं देखा, अतः मैं आप से निवेदन करूंगी.....

अध्यक्ष महोदय : मेरी आप से प्रार्थना है कि मैं परम्परा को तोड़ नहीं सकता।

राष्ट्रपति का अभिभाषण

PRESIDENT'S ADDRESS

सचिव : मैं आज सुबह संसद् की दोनों सभाओं के समक्ष राष्ट्रपति द्वारा दिये गये *अभिभाषण की एक प्रति सभापटल पर रखता हूं।

प्रधान मंत्री, सभा नेता तथा अन्य मंत्रियों का परिचय

INTRODUCTION OF PRIME MINISTER, LEADER OF HOUSE AND OTHER MINISTERS

अध्यक्ष महोदय : मैं इस सभा से नये प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का सहर्ष परिचय करात हूं। हम सभी उनको अच्छी तरह जानते हैं। इस देश का मार्गदर्शन करने में उनको सफलता मिले, इसके लिये हम सभी उनको अपनी शुभ कामनाएं भेंट करते हैं।

---

*अभिभाषण का पाठ, हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में, लोक-सभा वाद-विवाद के मूल संस्करण में दिया हुआ है

*The text of the Address in both Hindi and English appears in the original version of Lok Sabha Debates.

[अध्यक्ष महोदय]

सदन के नये नेता श्री सत्य नारायण सिंह का परिचय कराने में भी मुझे खुशी है।

An hon. Member: The hon. Minister may stand.

श्री प्रिय गुप्त (कटिहार) : मेरा एक स्पष्टीकरण सम्बन्धी प्रश्न है

अध्यक्ष महोदय : इस समय स्पष्टीकरण की कोई बात नहीं है

मुझे पता नहीं था कि इस सभा के सदस्य श्री सत्य नारायण सिंह से परिचित नहीं हैं, इसलिये उनको खड़ा हो जाना चाहिये था।

अब मैं प्रधान मंत्री से अनुरोध करूंगा कि वह, अन्य मंत्री जो नियुक्त किये गये हैं, उनका परिचय दें।

श्री प्रिय गुप्त : मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय : कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं है।

श्री प्रिय गुप्त : पहला स्थान किस का है ?

अध्यक्ष महोदय : यह इस आदेश का ही एक भाग है। वह बैठ जायें।

श्री प्रिय गुप्त : मुझे समाप्त कर लेने दीजिये। पहले स्थान पर कौन बैठेगा, सभा नेता अथवा प्रधान मंत्री ?

अध्यक्ष महोदय : प्रधान मंत्री पहले स्थान पर बैठेंगे और सभा नेता दूसरे स्थान पर।

Shri Bagri (Hissar): It is not the Convention of the House.

श्री प्रिय गुप्त : यह सभा की परम्परा नहीं है

प्रधान मंत्री तथा अणु शक्ति मंत्री (श्रीमती इंदिरा गांधी) : मैं आपको और आपके द्वारा सभा को इनका परिचय कराती हूं : श्री फखरुद्दीन अहमद, सिंचाई और विद्युत मंत्री ; श्री शचीन्द्र चौधरी वित्त मंत्री ; श्री जगजीवन राम, श्रम, रोजगार तथा पुनर्वास मंत्री ; श्री अशोक मेहता, योजना मंत्री ; श्री गोपाल स्वरूप पाठक, विधि मंत्री ; श्री गोविन्द मेनन, खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में राज्य मंत्री ; श्री चे० मु० पुनाचा, परिवहन तथा उड्डयन मंत्रालय में राज्य मंत्री ; श्री इकबाल सिंह, पेट्रोलियम और रसायन मंत्रालय में उपमंत्री ; श्री शफी कुरेशी, वाणिज्य मंत्रालय में उपमंत्री ; श्रीमती नन्दिनी सत्पथी, सूचना और प्रसारण मंत्रालय में उपमंत्री ; श्री शिंदे, खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में उपमंत्री तथा श्री विद्याचरण शुक्ल, संसद् कार्य विभाग तथा संचार विभाग में उपमंत्री।

अध्यक्ष महोदय : मुझे यह भी सूचना प्राप्त हुई है कि श्री जगन्नाथ राव इस सभा में मुख्य सचेतक होंगे।

श्री हेम बरुआ (गोहाटी) : अध्यक्ष को इसकी घोषणा क्यों करनी चाहिये ?

अध्यक्ष महोदय : मुझे सूचना प्राप्त हुई है ; यही मैंने कहा है।

श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी (केन्द्रपाड़ा) : प्रश्न यह है कि क्या कांग्रेस दल के मुख्य सचेतक का परिचय यहां दिया जाना चाहिये..... (**अन्तर्बाधायें**) राजनीतिक दलों के पदाधिकारियों के नामों की घोषणा अध्यक्ष को क्यों करनी चाहिये ?

अध्यक्ष महोदय : क्योंकि सूचना उसी पत्र में प्राप्त हुई थी ।

श्री हेम बरुआ : यह सर्वथा अनुचित है ।

निधन सम्बन्धी उल्लेख

OBITUARY REFERENCES

अध्यक्ष महोदय : बहुत ही दुःख के साथ मैं भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के दुःखद और आकस्मिक निधन का उल्लेख करता हूं। मैं इस पद पर लगभग 4 वर्ष से हूं और बहुत से मित्रों तथा साथियों के निधन संबंधी उल्लेख करने का मेरा दुःखद कर्त्तव्य रहा है । दुर्भाग्य से पिछले दो वर्ष के अल्पकाल में हमने दो प्रधान मंत्रियों को खो दिया है। आज मैं उस दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये खड़ा हुआ हूं जिन को पिछले सत्र में हमने अपनी शुभकामनाएं दी थीं । लाल बहादुर शास्त्री को इस राष्ट्र के भाग्य के मार्ग दर्शन करने के लिये केवल 18 महीने ही मिले । यह काम उन्होंने बड़ी बुद्धिमानी और कर्त्तव्यनिष्ठा से किया । प्रायः यह प्रश्न किया जाता था कि 'नेहरू के बाद कौन' और इस प्रश्न का उन्होंने काफी अच्छा उत्तर दिया । लाल बहादुर ने एक गरीब घराने में जन्म लिया था और वह एक असाधारण व्यक्ति सिद्ध हुए । उन्होंने हमारे संविधान की सार्थकता को सिद्ध कर दिया कि सभी को समान अवसर प्राप्त हैं और सब से छोटा व्यक्ति भी सब से बड़ा व्यक्ति बन सकता है ।

जून, 1964 में प्रधान मंत्री बनने से पूर्व उन्होंने विभिन्न पदों पर रह कर इस देश की सेवा की । 1957 में वह दूसरी लोक सभा के लिये चुने गये थे और उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद निर्वाचन क्षेत्र से तृतीय लोक सभा के सदस्य थे । वर्ष 1952 से 1956 तक वह रेलवे और परिवहन मंत्री थे । और 1956 में एक रेल दुर्घटना के कारण उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे कर यह सिद्ध कर दिया कि लोकतन्त्र में उनका कितना विश्वास था और लोकतंत्रात्मक परम्पराओं का वह कितना आदर करते थे । 1957 में आम चुनावों के बाद उन्हें फिर एक मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया। 1957 से 1958 तक उन्होंने परिवहन तथा संचार मंत्री के रूप में काम किया । 1958--61 के दौरान उन्होंने वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री के रूप में और 1961 से 63 के दौरान गृह-कार्य मंत्री के रूप में काम किया । 1963 में उन्होंने मंत्री पद से त्याग पत्र दे दिया परन्तु 1964 में उन्हें फिर से बिना विभाग के मंत्री के रूप में नियुक्त कर दिया गया था । उनका शांति का उद्देश्य था जिसके लिये कि उन्होंने अपने आप को समर्पित कर दिया था । इस उद्देश्य की पूर्ति के शीघ्र पश्चात् वह 11 जनवरी, 1966 को ताशकंद में चल बसे । 18 महीने का समय, जिस बीच वह प्रधान मंत्री रहे इस देश के इतिहास में निर्णायक समय के रूप में लिखा जायेगा । जब पाकिस्तान ने हमारे देश पर आक्रमण किया तो लाल बहादुर शास्त्री ने यह सिद्ध कर दिया कि हम शांति इसलिये नहीं चाहते हैं कि हम किसी प्रकार से कमज़ोर हैं अपितु इसलिये कि हम शांति को देश और विश्व के लिये आवश्यक समझते हैं । जब अवसर आया तो उन्होंने स्थिति का दृढ़ता से मुकाबिला किया और वही किया जो लोग

[अध्यक्ष महोदय]

चाहते थे। उनको सशस्त्र सेनाओं से, जनता से, तथा इस सभा के प्रत्येक दल से जो सहयोग मिला वह एक बेमिसाल उदाहरण रहेगा। अवसर आने पर उन्होंने बता दिया कि हमारा देश किस बहादुरी से लड़ सकता है, परन्तु जब शांति वार्ता आरम्भ हुई तो उन्होंने उसी उत्साह के साथ शांति की खोज की। स्वास्थ्य की खराबी के बावजूद भी उन्होंने अपने उद्देश्य के लिये बिना किसी अवकाश के काम किया।

उनका हृदय बहुत विशाल था और वह सब की बात सुनते थे। इस सभा के नेता के रूप में वह जब भी बोलते थे तो अपने नम्र तथा दृढ़ तर्कों से प्रतिपक्षी सदस्यों को शांत कर देते थे।

मुझे 23 देशों से समवेदना सन्देश प्राप्त हुए हैं। लाल बहादुर शास्त्री के निधन पर हम गहरा शोक प्रकट करते हैं। उनकी आत्मा को शांति मिले। मुझे विश्वास है कि संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करने में यह सभा मेरे साथ है।

Shrimati Indira Gandhi: Mr. Speaker, I pay my tributes to the memory of Shri Lal Bahadur Shastri. He was our colleague and our leader. I knew him since my childhood. He devoted his entire life to the service of the nation. He belonged to U.P. but was well conversant with the affairs and problems of each State. He quite often used to call himself a small man but that went to prove his greatness whenever the situation arose. As Mr. Speaker has said he was a very humble and peace-loving man but when the country was faced with an aggression he infused enthusiasm amongst all of us with a rare strength of mind and gave leadership to the nation which strengthened and united it.

He took upon himself several big and small responsibilities whereby he won a safe corner in the hearts of our masses. Today people belonging to each State, speaking each language, professing each religion claim him to be their very own. Our Party was fortunate to have such a man as its leader. The understanding and a peculiar type of relationship that he established with other parties also helped us in marching forward and in strengthening the entire nation.

I, on behalf of my colleagues and this House, pay tribute to the memory of Shri Lal Bahadur Shastri and I request you, Sir, to convey the same to his family.

श्री रंगा (चित्तूर) : अध्यक्ष महोदय, मैं, हमारा दल और मेरे नेता राजा जी लाल बहादुर शास्त्री जी की सेवाओं के प्रति अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं। उन्होंने रेलवे मंत्री के रूप में त्यागपत्र देकर यह दिखा दिया कि मंत्रियों के लिये उन के लिये उन के मंत्रालयों के कार्यों के संबंध में विशेषज्ञ होना आवश्यक नहीं है, परन्तु उनसे यह आशा की जाती है कि उनको जनता का समर्थन प्राप्त हो। यदि कभी कोई दुर्घटना हो जाये, जैसी कि उस समय हुई, जिस से कि मंत्रालयों के कर्मचारियों पर मंत्रियों के नियंत्रण की कमी प्रतीत हो उन को अपने पद से त्यागपत्र दे देना चाहिये और इस प्रकार लोकतंत्र को मजबूत बनाना चाहिये।

उन्होंने शांति के लिये ताशकंद में अपनी जान तक दे दी और ऐसे उदाहरण हमें इतिहास में बहुत कम मिलेंगे। आजकल के जमाने में लाल बहादुर शास्त्री जैसे व्यक्ति बहुत कम हैं और उनकी बहुत आवश्यकता है। उनके निधन पर हम सब को गहरा दुःख है। आज हम सब उनकी बहुत कमी महसूस कर रहे हैं, परन्तु फिर भी हमें इस बात का फख़र है कि हम ने उनको देखा है और उन के साथ काम किया है।

श्री ही० ना० मुकर्जी (कलकत्ता मध्य): अध्यक्ष महोदय, आपने, प्रधान मंत्री ने और प्रो० रंगा ने जो दुख के भाव व्यक्त किये हैं उस में मैं और मेरा दल भी साथ देते हैं। उनकी मृत्यु ऐसे समय में हुई जब कि वह अपने कार्य में सफलता के शिखर पर थे। उनकी शक्ति, उनकी विनम्रता और उन के शांतचित्त में थी। उन्होंने रेलवे मंत्री के पद से त्यागपत्र दे कर अपनी शक्ति का परिचय दिया था। साधारणत: ऐसे समय पर मंत्री अपने पद पर चिपके रहने का प्रयत्न करते हैं। उन्होंने अपनी वास्तविक शक्ति का प्रमाण उस समय दिया जब वह प्रधान मंत्री बने। जवाहरलाल नेहरू के पीछे चलना कोई आसान काम नहीं था। वह लोक सेवक समिति के सदस्य थे जिसको लाला लाजपतराय ने चलाया था और वह सही मानों में जनता के सेवक थे। एक गरीब घराने से इतना बड़ा व्यक्ति बन कर उन्होंने दिखा दिया कि इस देश में अच्छा चरित्र क्या कुछ प्राप्त कर सकता है।

भारत-पाकिस्तान संघर्ष के दौरान संसार को उनकी आन्तरिक शक्ति का पता चला। जब युद्ध करना आवश्यक हो गया तो उन्होंने कोई हिचकिचाहट नहीं दिखायी। ताशकन्द में उन्होंने राष्ट्रपति अयूब के साथ यह प्रतिज्ञा की कि हम शांति बनाये रखेंगे और अच्छे पड़ौसी बन कर रहेंगे। मुझे विश्वास है कि यह कृतज्ञ देश उस प्रतिज्ञा का पालन करेगा।

Shri U. M. Trivedi (Mandsaur): Mr. Speaker, Sir, from my association with Shri Lal Bahadur Shastri since 1952 and my presence in Lok Sabha I had begun to realise that after eighteen years of independence a golden Period of eighteen months had dawned in which not only we enjoyed 'Swarajya', *i.e.* independence but also 'surajya', *i.e.* good government.

Lal Bahadur Shastri was a great commoner. His death is a nirreparable loss to the nation. This short statured great personality became immensely popular by virtue of his fearlessness and simplicity within a short span. His loss is a severe blow to the nation. Members of this House would find it impossible to forget his gentle and composed face. May God give peace to the departed soul.

Through you, sir, on behalf of my party and other parties I wish to convey my heartfelt sympathies to the grief stricken family.

श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी (केन्द्रपाड़ा): अध्यक्ष महोदय, लाल बहादुर शास्त्री अपने स्वयं के प्रयत्नों द्वारा ही इतने ऊंचे पद तक पहुंचे थे। उन्होंने भारत के लोगों के कल्याण के लिये अपने आपको समर्पित कर दिया था। वह देवतास्वरूप थे और प्रधान मंत्री बनने के बाद उन्होंने हमारे करोड़ों देशवासियों के दिलों में घर कर लिया था। उनके हृदय में आम लोगों के लिये प्यार था और इसी कारण वह इतने लोकप्रिय हुए। उन्होंने इस देश के राजनीतिक जीवन पर अपनी सादगी, विनम्रता और सच्चाई की छाप लगा दी है। उन्होंने ऐसे संकट के समय में इस देश का नेतृत्व किया जबकि बड़े बड़े व्यक्ति घबरा जाते हैं।

उनकी कमी को हम इस सभा में सदैव ही महसूस करते रहेंगे क्योंकि उन जैसा व्यक्ति हमें कभी नहीं मिलेगा। लाल बहादुर शास्त्री का स्थान इतिहास में एक महापुरुष, एक महान प्रशासक और एक महान प्रधान मंत्री के रूप में रहेगा। मैं अपनी और अपने दल की ओर से उनकी मृत्यु पर संवेदना व्यक्त करता हूं।

श्री त्रिदिव कुमार चौधरी (बरहामपुर): अध्यक्ष महोदय, लाल बहादुर शास्त्री एक ऐसे प्रधान मंत्री थे जो हमारे देशवासियों के बहुत निकट थे। जब लाल बहादुर शास्त्री जीवित

[श्री त्रिदिब कुमार चौधरी]

थे तो श्री अशोक मेहता ने कहा था लाल बहादुर शास्त्री में एक ऐसा प्रधान मंत्री देखते हैं जो जानते हैं कि भूख क्या है। इस देश के इतिहास के एक संकट के समय में सभी देश-वासियों और संसार के सभी देशों ने उनको श्रद्धांजलि भेंट की है। प्रधान मंत्री तथा सभा के विभिन्न वर्गों द्वारा व्यक्त किये गये शोक में मैं और मेरा दल शामिल होते हैं।

श्री कर्णी सिंहजी (बीकानेर): श्रीमन्, हमारे प्यारे प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री के निधन पर व्यक्त किये गये शोक में हम स्वतन्त्र संसदीय ग्रुप की ओर से शामिल होते हैं। 18 महीने के छोटे से काल में उन्होंने बहुत ख्याति पाई और उनकी मृत्यु उस समय हुई जबकि अपने देश की सेवा में अपनी ख्याति के शिखर पर थे।

शास्त्री जी ने हमारे करोड़ों देशवासियों के दिलों में घर कर लिया था और युद्ध में हमारी विजय प्राप्त की थी। वह स्वतन्त्रता और राष्ट्रीय एकता के प्रतीक बन गये थे। युद्ध के दौरान हमारी सशस्त्र सेनाओं को उनसे बड़ा बल मिला। उनकी सबसे बड़ी खूबी यह थी कि उनमें किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था। वह एक व्यावहारिक मनुष्य थे और उन्होंने हमारे देश के कार्य को व्यावहारिक तरीके से चलाया।

समाजवाद में उनका दृढ़ विश्वास था और इस बात का प्रमाण इससे मिलता है कि वह अपने परिवार के लिये कुछ भी छोड़ कर नहीं मरे हैं।

डा० मा० श्री० अणे (नागपुर) : श्रीमन्, लाल बहादुर शास्त्री शांति और युद्ध दोनों के लिये ही एक महान व्यक्ति सिद्ध हुए हैं। ये दोनों गुण एक ही व्यक्ति में बहुत कम मिलते हैं। वह न केवल सिद्धान्तवाद में ही विश्वास रखते थे अपितु वास्तविकता में भी उनका विश्वास था। यही कारण था कि वह बड़ी बड़ी समस्याओं पर भी सही निर्णय कर सके। 18 महीने के थोड़े से शासन काल में उन्होंने दिखा दिया कि एक हठी शत्रु से लड़ने की उनमें कितनी शक्ति थी। इसके साथ ही उनका हृदय बड़ा विशाल था और उन्होंने शांति के लिये हाथ बढ़ाया। अतः ताशकन्द में हमने जो कुछ खोया है वह मेरी राय में कुछ नहीं है यदि पाकिस्तान इमानदारी से काम करे। हमें दुख है कि हमने उस पुरुष को खो दिया है। परन्तु उन्होंने हमारे सामने एक उदाहरण रखा है और मुझे विश्वास है कि नये प्रधान मंत्री और कैबिनेट उसको भुलायेंगे नहीं और उस पर चलने के लिये प्रयत्न करेंगे ।

Shri Prakash Vir Shastri (Bijnaur): Mr. Speaker, at the time when President Rajendra Prasad was leaving for Sadakat Ashram, Patna, Shri Lal Bahadur Shastri had said that Rashtrapati Bhawan would remember that a President who rose from the position of abject poverty lived there once. The same can be said about 10, Janpath where a Prime Minister of the masses, brought up in poverty, who realised the miseries of the poor, lived there.

Shri Lal Bahadur was an embodiment of simple living and high thinking. His melodious voice, simple dress and pleasant behaviour attracted everybody and one felt like meeting him time and again. Summing up his character in a poetic expression he was soft like a flower and yet when occasion demanded he was hard like a rock. When the situation arose he demonstrated the strength of his mind.

It was the last day of the session and he was making plans for going to Tashkent. We were congratulating him and were offering him our good wishes. We were also briefing him about the feelings and views he should represent and express at Tashkent. Had we known that it would be his last travel and he will not return from Tashkent then we might have paid tributes to his patriotic achievements. We wish that we knew all this.

It is not appropriate to mention here the circumstances in which he had to sign the agreement but I would emphasise that he remained firm to the last. He could not live to see a single soldier withdrawing from Haji Pir, Uri, Poonch, Kargil and Tithwal areas about which he emphatically declared that they were integral parts of our country and the question of withdrawing from there did not arise at all. He stuck to the firm stand that he took till he breathed his last.

Shastriji was an embodiment of Indian Culture. He was an admirer of Sanskrit which in the words of Jawahar Lalji represented Indian culture. So Shri Shastri was Indian culture personified. In spite of being too busy he has been sparing some time for promoting of Indian language. He is not amongst us today. The void created by his death would always be felt in this House, in the country and by those who have faith in the dignity of the nation. I on behalf of my colleagues and myself pay homage to that great soul.

Shri B. P. Maurya (Aligarh): Mr. Speaker, our dear and precious leader Shri Lal Bahadur, by sacrificing his life at the altar of freedom and for the welfare of humanity has made it clear not only to our neighbours, *i.e.*, Pakistan and China but to the entire world that India is capable of making any sacrifice for maintaining peace. Born and brought up in a poor family, this great leader eliminated in a short span of eighteen months most of the problems that were rampant for the last eighteen years in the country and also proved that a poor man can also rise to any heights by dint of his ability and high calibre. As Lord Buddha gave to the world a message of peace similarly this great man of India sacrified his very life for the cause of peace. I conclude by paying tributes to the departed leader on behalf of myself and my party.

श्री राजाराम (कृष्णगिरि) : अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री के निधन पर इस सभा में व्यक्त किये गये शोक में मैं और मेरा दल शामिल होते हैं ।

18 महीने के थोड़े से समय में उन्होंने इस खूबी से राष्ट्र का काम चलाया कि उन्होंने इतिहास स्वयं इतिहास ही बना दिया । उन्होंने एक परम्परा स्थापित की और वह थी प्रतिपक्ष की राय को सुनने की और उसको उचित महत्व देने की । हमें उस परम्परा को बनाये रखना है । वह सादगी पसन्द और सच्चे और ईमानदार व्यक्ति थे । वह शांति के देवता थे और वह साहसी भी थे । संसार के नेताओं में उनका एक ऊंचा स्थान है । ताशकन्द घोषणा उनकी सफलता का प्रतीक है ।

श्री मुहम्मद इस्माइल (मंजरी) : अध्यक्ष महोदय, शास्त्रीजी ने 18 महीने के छोटे से समय में वह ख्याति प्राप्त की जिसकी मिसाल संसार की संसदीय सरकारों के इतिहास में कहीं नहीं मिलती । उनके दिल और दिमांग के गुणों ने उनको केवल भारत का ही नहीं, अपितु संसार का एक बड़ा राजनीतिज्ञ बना दिया । उनकी विनम्रता, सादगी और दृढ़ता उनके चरित्र की मुख्य खूबियां थी । ताशकन्द घोषणा का इस देश के इतिहास में बड़ा महत्व है ।

ताशकन्द घोषणा में शास्त्रीजी का सहयोग स्मर्णीय है जिसके लिये कि संसार और भारत उनका सम्मान करता है । उन्होंने अपने गुणों के कारण हमारे देश को दुनिया की नज़रों में ऊंचा उठा दिया है ।

Shri Bagri (Hissar): Mr. Speaker, I express my heartfelt sorrow at the untimely death of our Prime Minister and I pay tributes to his memory on behalf of myself and my party in these words that homage is paid to great leaders not by shedding tears and by acting upon their words. Shri Lal Bahadur Shastri had declared in this House and before the public that Haji Pir, Kargil, Tithwal, Uri and Poonch are integral parts of India and we cannot surrender them at any cost. **The only befitting tribute we can pay to him is to abide** by his declaration and I hope that the present Prime Minister and Lok Sabha would fulfil the assurance given by him.

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य अपना शोक व्यक्त करने के लिये कृपया थोड़ी सी देर के लिये मौन खड़े हो जायें ।

(तब सदस्य थोड़ी देर के लिये मौन खड़े हो गये)

(The Members then stood in silence for a short while)

अध्यक्ष महोदय : मुझे सभा को छः अन्य मित्रों, अर्थात, श्री अहमद मुहिउद्दीन, श्री उ० श्री० मल्लय्या, श्री नटराज पिल्ले, श्री नरहरि विष्णु गाडगील, चौधरी लाल चन्द और श्री के० जी० वोडियार की दुखद मृत्यु का समाचार देना है ।

श्री अहमद मुहीउद्दीन परिवहन मंत्रालय में उपमंत्री थे और आंध्र प्रदेश के हैदराबाद निर्वाचन क्षेत्र से इस सभा के सदस्य थे । वह पहली और दूसरी लोक सभा के भी सदस्य थे । वह प्रवर समिति के सदस्य थे । समितियों में उन्होंने बहुत अच्छा कार्य किया और इस सभा के वाद-विवादों में भी अच्छा भाग लिया । 1958 से 1962 तक वह असैनिक उड्डयन मंत्रालय में उपमंत्री थे । 5 जनवरी 1966 को 67 वर्ष की आयु में नई दिल्ली में उनका देहान्त हो गया ।

श्री उ० श्री० मल्लैय्या मैसूर के उदीपी निर्वाचन क्षेत्र से वर्तमान लोक सभा के सदस्य थे । वह संविधान सभा, अस्थायी संसद् और प्रथम और दूसरी लोक सभा के भी सदस्य थे । वह उप-मुख्य सचेतक भी थे और प्रथम और द्वितीय लोक सभा की आवास समिति के सभापति भी थे । 19 दिसम्बर, 1965 को 62 वर्ष की आयु में नई दिल्ली में उनका देहान्त हो गया ।

श्री नटराज पिल्ले केरल के त्रिवेन्द्रम निर्वाचन क्षेत्र से इस सभा के सदस्य थे । वह 1948 से 1950 के दौरान संविधान सभा के भी सदस्य थे । 10 जनवरी, 1966 को 75 वर्ष की आयु में ट्रिवेंड्रम में उनका देहान्त हो गया ।

श्री नरहरि विष्णु गाडगील 1934 से 1941 के दौरान और फिर 1945 से 1947 के दौरान केन्द्रीय विधान सभा के सदस्य थे । 1946 से 1952 के दौरान वह संविधान सभा और अस्थायी संसद् के सदस्य थे और 1952 से 1957 के दौरान प्रथम लोक सभा के सदस्य थे । 1947 से 1952 के दौरान वह निर्माण, खान और विद्युत् मंत्री और बाद में निर्माण, उत्पादन और संभरण मंत्री थे । बाद में वह पंजाब के राज्यपाल भी रहे और उन्होंने अपना अन्तिम समय शिक्षा के क्षेत्र में लगाया । 12 जनवरी, 1966 को पूना में उनका देहान्त हो गया ।

चौधरी लाल चन्द 1931 से 1934 के दौरान और फिर 1937 में केन्द्रीय विधान सभा के सदस्य थे । प्रथम महायुद्ध में उन्होंने सेना में मेजर के पद पर काम किया । 26 जनवरी, 1966 को 87 वर्ष की आयु में रोहतक में उनका देहान्त हो गया ।

श्री के० जी० बोडियार 1952 से 1962 के दौरान प्रथम और द्वितीय लोक सभा के सदस्य थे। 8 दिसम्बर, 1965 को 65 वर्ष की आयु में सागर में उनका देहान्त हो गया। इन मित्रों के निधन पर हमें गहरा दुख है और मुझे विश्वास है कि संतप्त परिवारों को संवेदना संदेश देने में यह सभा मेरे साथ है ।

(इसके बाद सदस्य कुछ समय के लिये मौन खड़े हो गये।)

(The Members then stood in silence for a short while)

इसके पश्चात् लोक-सभा मंगलवार, 15 फरवरी, 1966/26 माघ, 1887 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित हुई।

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Tuesday, February 15, 1966/Magha 26, 1887 (Saka).

GMGIPND—LS III—2522(A1)LS—9-6-66—600